6

प्रेरितों 1-8 में आत्मा का दिया जाना

आज पवित्र आत्मा के काम के विषय में बहुत उलझन पाई जाती है। ऐसी उलझन होने पर, हमें प्रेरितों के काम की पुस्तक में लिखे गए पवित्र आत्मा के आरम्भ का अध्ययन बड़ी सावधानी से करना चाहिए। झूठी शिक्षा के आरम्भ होने, परम्पराओं के जुड़ने और लोगों की उलझन से पहले की कलीसिया के आरम्भ का अध्ययन कर हम पहली शताब्दी में पवित्र आत्मा के काम को समझ सकते हैं, जिससे डॉक्ट्रिन की या शिक्षा सम्बन्धी बहुत सी गलतियों से बच सकते हैं।

प्रेरितों के काम के पहले आठ अध्यायों की पूरी सामग्री को देखकर, हमें पवित्र आत्मा से सामर्थ के तीन अलग-अलग प्रदर्शन मिलते हैं: (1) पवित्र आत्मा का बपतिस्मा, (2) प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र आत्मा की ओर से मिलने वाले आश्चर्यकर्म के दान, और (3) प्रेरितों 2:38 में पवित्र आत्मा का प्रतिज्ञा किया हुआ दान। इस पाठ में हम कलीसिया में पवित्र आत्मा की विशेष भूमिकाओं का अध्ययन करेंगे।

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा

पवित्र आत्मा ने कलीसिया में एक विशेष भूमिका निभानी थी। उसकी उपस्थिति यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और स्वयं यीशु द्वारा की गई प्रतिज्ञाओं का पूरा होना था।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले द्वारा की गई प्रतिज्ञा

नये नियम में पवित्र आत्मा का सबसे पहला हवाला मत्ती 3 में मिलता है। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला यहूदिया के जंगल में यहूदियों की भीड़ में प्रचार कर रहा था। उनमें से कई लोग अपने-अपने पापों को मानकर यरदन नदी में यूहन्ना से बपतिस्मा ले रहे थे (आयत 6)। परन्तु जब कुछ फरीसी और सदूकी बपतिस्मा लेने के लिए उसके पास आए, तो यूहन्ना ने उन कपटियों को, जिन्होंने अपने पापों से सच्चे मन से मुड़ने से इनकार कर दिया था, मन फिराने का एक गरजता हुआ संदेश दिया (आयतें 7-10)। मत्ती 3:11, 12 में यूहन्ना ने प्रतिज्ञा दी:

> मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे बाद आने वाला है, वह मुझ से शक्तिशाली है; मैं उसकी जूती खोलने के योग्य भी नहीं, वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। उसका सूप उसके हाथ में है और वह अपना खलिहान अच्छी रीति से साफ़ करेगा, और गेहूं को तो खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा, जो बुझने की नहीं।

आज कई लोग निष्कपटता से ''पवित्र आत्मा और आग का'' बपतिस्मा पाना चाहते हैं, परन्तु इस पद का संदर्भ संकेत देता है कि यूहन्ना एक बपतिस्मे की नहीं, बल्कि बिल्कुल दो अलग-अलग बपतिस्मों की बात कर रहा था-इनमें से एक तो पवित्र आत्मा का बपतिस्मा था और दूसरा आग का। यूहन्ना ने आगे समझाया कि आग का बपतिस्मा परमेश्वर के न्याय का बपतिस्मा है, जो ''भूसी को उस आग में जलाएगा, जो बुझने की नहीं।'' निश्चय ही किसी मसीही को आग का बपतिस्मा पाने की प्रार्थना नहीं करनी चाहिए!

दूसरा बपतिस्मा जिसका उल्लेख यूहन्ना ने किया, वह पवित्र आत्मा का बपतिस्मा था। इस बपतिस्मे के बारे में काफ़ी गलतफहमी है। क्या हमें ऐसे किसी बपतिस्मे के लिए प्रार्थना करनी चाहिए? वह बपतिस्मा क्या था, जिसकी प्रतिज्ञा यूहन्ना ने की थी कि यीशु देगा?

यीशु द्वारा पुष्टि की गई

प्रेरितों के काम में यीशु पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की प्रतिज्ञा की बात स्पष्ट करने लगा। अपने स्वर्गारोहण से थोड़ा पहले उसने अपने प्रेरितों से भेंट की। हम पढ़ते हैं, ''और उनसे मिलकर उन्हें आज्ञा दी, कि यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो, जिस की चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है, परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्रात्मा से बपतिस्मा पाओगे'' (प्रेरितों 1:4, 5)।

इन आयतों में पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के बारे में *बहुत महत्वपूर्ण* सबक दिए गए हैं। आइए यीशु की बात की विशेष प्रकृति पर विचार करते हैं।

(1) पवित्र आत्मा का बपतिस्मा एक *प्रतिज्ञा* थी, जो यीशु ने *एक विशेष समूह* को दी थी। अपने स्वर्गारोहण से पहले यीशु अपने प्रेरितों को प्रतिज्ञा देते हुए केवल उन्हीं से बात कर रहा था, ''थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्रात्मा से बपतिस्मा पाओगे'' (प्रेरितों 1:5)। आत्मा का बपतिस्मा प्रेरितों को दी गई प्रतिज्ञा थी, न कि यीशु के सब चेलों द्वारा मानी जाने वाली आज्ञा।

(2) आत्मा में अपने प्रेरितों को बपतिस्मा देने की यीशु की प्रतिज्ञा *एक विशेष समय* में अर्थात ''थोड़े दिनों के बाद'' पूरी होनी थी। प्रेरितों के काम 2 अध्याय पिन्तेकुस्त के दिन उस प्रतिज्ञा के पूरा होने के बारे में बताता है।

(3) यीशु की प्रतिज्ञा *एक विशेष स्थान* में पूरी होनी थी। उसने अपने प्रेरितों को ''आज्ञा दी, कि यरूशलेम को न छोड़ो'' (प्रेरितों 1:4)। पवित्र आत्मा का बपतिस्मा यरूशलेम नगर में दिया जाना था।

(4) यीशु ने प्रतिज्ञा की कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा *विशेष उद्देश्य* के लिए था। उसने प्रतिज्ञा की, ''परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और सारे

यहूदिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे'' (प्रेरितों 1:8)। ''आज मसीही व्यक्ति में पवित्र आत्मा का काम'' पाठ में हमने सीखा था कि जब पवित्र आत्मा के किसी पर ''उतरने'' की बात की गई है, तो इसमें आश्चर्यकर्म होता था। पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के द्वारा, यीशु ने अपने चुने हुए प्रेरितों को ऊपर से आश्चर्यकर्म की सामर्थ से भरपूर करने की प्रतिज्ञा की, ताकि वे सारे संसार में जाने के उसके विश्वव्यापी मिशन को पूरा कर सकें।

इन चार अवलोकनों से हमें यह निष्कर्ष निकालना होगा कि पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की यीशु की प्रतिज्ञा चेलों के *एक विशेष समूह* (प्रेरितों) के लिए, *एक विशेष समय* (थोड़े दिनों के बाद), *एक विशेष स्थान* (यरूशलेम) में, और *एक विशेष उद्देश्य* (प्रेरितों को उसके ईश्वरीय मिशन को ले जाने के लिए आश्चर्यकर्म से सामर्थ देने) के लिए थी। हम ऐसी झूठी शिक्षा को स्वीकार नहीं कर सकते, जो आज कुछ लोग दे रहे हैं कि इक्कीसवीं शताब्दी में लोगों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिलना आवश्यक है! उद्धार पाने वाले हर व्यक्ति को आत्मिक लाभ प्राप्त होगा, जो आत्मा में बपतिस्मा लेने के समय प्रेरितों को दिए गए थे, पर उसे आत्मा का बपतिस्मा नहीं मिलता। जब यीशु ने प्रेरितों को पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दिया था, तो संसार में कलीसिया का जन्म आश्चर्यकर्म से हुआ था, और पवित्र आत्मा उसके सुसमाचार को मानने वालों को दान के रूप में दिया गया था (प्रेरितों 2:38; 5:32)। इस प्रतिज्ञा में यहूदियों और अन्य जातियों दोनों को शामिल किया गया था, बल्कि यह ''उन सब दूर-दूर के लोगों के लिए भी है, जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा'' (प्रेरितों 2:39)। पिछले वाक्यांश में आपको और मुझे भी शामिल किया गया है!

पिन्तेकुस्त के दिन पूरा हुआ

प्रेरितों 2 में हमें प्रेरितों को पवित्र आत्मा की यीशु की प्रतिज्ञा पूरी होती मिलती है:

> जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे। और एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं; और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं। और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे (आयतें 1-4)।

''वे सब एक जगह'' किसके लिए कहा गया है? क्या यह प्रेरितों 1:15 में उल्लेखित 120 चेले थे या 12 प्रेरित? यह मुख्य प्रश्न है, क्योंकि प्रेरितों 2:1 में ''वे सब एक जगह इकट्ठे थे'' उन्हीं के लिए कहा गया है, जिन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला था। प्रेरितों 1 अध्याय की अन्तिम आयत में बताया गया है कि लूका के मन में वे लोग कौन थे। हम पढ़ते हैं कि मत्तिय्याह ''उन ग्यारह प्रेरितों के साथ गिना गया।'' अगली आयत, यानी 2:1 कहती है, ''वे [मत्तिय्याह और ग्यारह प्रेरित] सब एक जगह इकट्ठे थे।'' प्रेरितों 2:1 प्रेरितों के विषय में है, न कि 120 लोगों के लिए। इस हवाले के सम्बन्ध में किए जाने वाले किसी भी प्रश्न का उत्तर प्रेरितों को दी जाने वाली सामर्थ और अधिकार की स्थिति (120

को नहीं) से पवित्र आत्मा में उनके बपतिस्मे का पता चलता है।

प्रतिज्ञा के पूरा होने के साथ आश्चर्यकर्म हुए। पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की प्रतिज्ञा का पूरा होना एक ज़ोरदार, गूंज भरी आवाज़ के साथ था (आयत 2)। इस शोर ने जो एक तूफ़ान या आंधी जैसा लगता था, पिन्तेकुस्त के पर्व पर आए हज़ारों लोगों का ध्यान आकर्षित किया और लोगों की बड़ी भीड़ इकट्ठी होने लगी (आयत 6)।

प्रेरितों पर पवित्र आत्मा के आरम्भिक बपतिस्मे के साथ दो बड़े आश्चर्यकर्म हुए। एक आश्चर्यकर्म तो सुनाई दिया: सनसनाहट का शब्द, आंधी जिससे लोगों का ध्यान उधर हो गया और वे वहां इकट्ठे हो गए। एक और आश्चर्यकर्म दिखाई देने वाला था: ''आग की सी जीभें'' प्रेरितों में से हर एक पर उतरीं (आयत 3)। सुनाई देने वाले आश्चर्यकर्म से लोग इस अवसर पर इकट्ठे हो गए और दिखाई देने वाले आश्चर्यकर्म ने लोगों की भीड़ का ध्यान यीशु के प्रेरितों की ओर आकर्षित किया!

तीसरा आश्चर्यकर्म हुआ था, जिसमें प्रेरित अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे थे (आयत 4)। इस आश्चर्यकर्म में सभी प्रेरित शामिल थे। बाद में इस अवसर के लिए पतरस ने उपदेश दिया था: परन्तु हर प्रेरित अन्य भाषाओं में, या अलग भाषाओं में वहां उपस्थित कई देशों के लोगों से बात कर रहा था। अलग-अलग देशों के लोगों के इकट्ठा होने (जिनकी सूची 9 से 11 आयतों में दी गई है), एक-दूसरे से अपनी-अपनी भाषा में बातें करने की तस्वीर ध्यान में आती है। यद्यपि बारह से अधिक देशों की सूची है, स्पष्टतया केवल बारह प्रेरितों ने ही भीड़ से बात की थी। (इसे हम अमेरिका और इंग्लैंड की भाषा की स्थिति से तुलना करके समझ सकते हैं-वे देश तो दो हैं पर भाषा एक ही है।) बारह प्रेरित अलग-अलग देशों के लोगों से उनकी भाषा में बातें करने लगे। अन्य भाषाओं के इस आश्चर्यकर्म ने यहूदियों में एक चिह्न का काम किया (जो उस समय यीशु को परमेश्वर का पुत्र नहीं मानते थे) कि वे प्रेरितों के संदेश पर ध्यान दें। बाद में पौलुस ने लिखा, ''इसलिए अन्य भाषाएं विश्वासियों के लिए नहीं, परन्तु अविश्वासियों के लिए चिह्न हैं'' (1 कुरिन्थियों 14:22)।

प्रतिज्ञा के पूरा होने के साथ शक्तिशाली परिणाम थे। प्रेरितों पर पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के ज़बर्दस्त प्रभाव उसके बाद कलीसिया में उन्हें मिलने वाली आधिकारिक भूमिका से स्पष्ट होते हैं। प्रेरित ही थे, जिन्होंने पिन्तेकुस्त के दिन अन्य-अन्य भाषाओं में बात की थी (तुलना प्रेरितों 2:7, 8)। पतरस ने उन ग्यारह के साथ खड़े होकर भीड़ में यीशु का संदेश सुनाया था (प्रेरितों 2:14-36)। पतरस के उपदेश के बाद, ''हे भाइयो, हम क्या करें?'' यह प्रश्न ''पतरस और शेष प्रेरितों'' से ही पूछा गया था (प्रेरितों 2:37)।

पिन्तेकुस्त के दिन आश्चर्यकर्म होने के कारण लोगों ने प्रेरितों के ईश्वरीय अधिकार को पहचान लिया था और बहुत से लोग उद्धार पाने के प्रश्न के परमेश्वर के आधिकारिक उत्तर के लिए प्रेरितों के पास आए थे। पतरस ने परमेश्वर की प्रेरणा से आज्ञा दी थी, ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; ...'' (प्रेरितों 2:38)। तीन हज़ार लोगों ने इस अवसर पर उसकी बात मान ली थी। बपतिस्मा लेने के बाद ये नये बने मसीही, ''प्रेरितों से शिक्षा पाने, ... में

लौलीन रहे'' (प्रेरितों 2:42)। अगली आयत कहती है कि ''बहुत से अद्‌भुत काम और चिह्न *प्रेरितों के द्वारा* प्रकट होते थे'' (प्रेरितों 2:43)। यरूशलेम में पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के बपतिस्मे ने यीशु के प्रेरितों को उसके आधिकारिक, आश्चर्यकर्म करने वाले, अनेकों भाषाएं बोलने वाले वक्ता बना दिया था!

प्रेरितों के काम पुस्तक के अगले कुछ अध्यायों में, कोई आश्चर्यकर्म करने का श्रेय *किसी प्रेरित के अलावा किसी और को नहीं* मिलता। प्रेरितों 3 में पतरस और यूहन्ना ने जन्म के एक लंगड़े को चंगा किया था। प्रेरितों 4:33 में हम पढ़ते हैं, ''और *प्रेरित* बड़ी सामर्थ से प्रभु के जी उठने की गवाही देते रहे, ...।'' प्रेरितों 5 में हम यह स्पष्ट तस्वीर देखते हैं:

> और विश्वास करने वाले बहुतेरे पुरुष और स्त्रियां प्रभु की कलीसिया में और भी अधिक आकर मिलते रहे। यहां तक कि लोग बीमारों को सड़कों पर ला लाकर, खाटों और खटोलों पर लिटा देते थे, कि जब परतस आए, तो उस की छाया ही उन में से किसी पर पड़ जाए। और यरूशलेम के आस-पास के नगरों से भी बहुत लोग बीमारों और अशुद्ध आत्माओं के सताए हुओं को ला-लाकर, इकट्ठे होते थे, और सब अच्छे कर दिए जाते थे (आयतें 14-16)।

आज कुछ लोग परमेश्वर की ओर से आश्चर्यकर्म की सामर्थ होने का दावा करते हैं। पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाए होने का दावा करके वे यह कहते हैं कि वे भी वही चिह्न और अद्‌भुत काम कर सकते हैं, जो यीशु और उसके प्रेरित पहली शताब्दी में करते थे। ऐसे दावों की तुलना प्रेरितों के काम पुस्तक में लूका के परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए ऐतिहासिक विवरण से करनी चाहिए। यदि विश्वास से चंगाई देने वाले आधुनिक लोग *हर प्रकार की बीमारी* को चंगा करने में सक्षम नहीं हैं, तो वे हमारे प्रभु की कलीसिया के आरम्भिक दिनों में प्रेरितों द्वारा किए जाने वाले काम नहीं कर रहे थे!

प्रेरितों 5:17-32 में, हम प्रधान याजक और उसके साथियों द्वारा प्रेरितों को गिरफ्तार करने के बारे में पढ़ते हैं। एक बार फिर हम देखते हैं कि सुसमाचार का प्रचार करने और आश्चर्यकर्म करने वाले प्रेरित ही थे; इसी कारण इस अवसर पर गिरफ्तार होने वाले भी प्रेरित ही थे। अध्याय 5 में प्रेरितों के आश्चर्यकर्म से कैद से छूटने का विवरण है, जिसमें प्रभु के एक स्वर्गदूत ने जेल के फाटक खोल दिए और उन्हें यह कहते हुए बाहर ले आया कि ''जाओ, मन्दिर में खड़े होकर, इस जीवन की सब बातें लोगों को सुनाओ'' (आयत 20)। अगली सुबह अधिकारियों ने बताया कि जेल वैसे ही सुरक्षित थी और रखवाले भी दरवाज़ों पर खड़े थे, पर जेल के भीतर कोई नहीं था (आयतें 22, 23)!

प्रेरितों के हाथ रखे जाना

प्रेरितों 2 अध्याय से लेकर प्रेरितों 5 अध्याय तक, 4 अध्यायों में यह स्पष्ट है कि यीशु के प्रेरितों को शिक्षा, प्रचार, उनके द्वारा किए जाने वाले सामर्थ के कामों में परमेश्वर का अधिकार पाए हुओं के रूप में पहचान मिल गई थी। प्रेरिताई का यह अधिकार पिन्तेकुस्त

के दिन पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के द्वारा मिला था। परन्तु प्रेरितों 6 में किसी और ने जो प्रेरित नहीं था, चिह्न और अद्‌भुत काम करना शुरू कर दिया।

सात पर

प्रेरितों 6:8 में हम पढ़ते हैं, ''स्तिफनुस अनुग्रह और सामर्थ से परिपूर्ण होकर लोगों में बड़े-बड़े अद्‌भुत काम और चिह्न दिखाया करता था।'' स्तिफनुस प्रेरित नहीं था, इसलिए किसी प्रेरित के अलावा किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा आश्चर्यकर्म करने का यह पहला उदाहरण है। स्तिफनुस को यह सामर्थ कैसे मिली ? इस प्रश्न का उत्तर प्रेरितों 6:5, 6 में मिलता है, जहां हम पढ़ते हैं कि स्तिफनुस उन सात में से एक था जिन पर प्रेरितों ने अपने हाथ रखे थे। प्रेरितों के हाथ रखने से स्तिफनुस ''अद्‌भुत काम और चिह्न'' दिखाने लगा था (आयत 8)।

प्रेरितों 8 अध्याय फिलिप्पुस के बारे में बताता है, जो उन सात में से था जिन पर प्रेरितों 6 में प्रेरितों ने हाथ रखे थे। फिलिप्पुस मसीह का प्रचार करने और चिह्न दिखाने के लिए सामरिया में गया (प्रेरितों 8:5, 6)। फिलिप्पुस की शिक्षा और आश्चर्यकर्मों से लोगों को चंगाई मिली और बहुत से लोगों ने बपतिस्मा लिया (तुलना आयतें 7, 12)। जब प्रेरितों ने फिलिप्पुस की सफलता की बात सुनी, तो उन्होंने पतरस और यूहन्ना को सामरिया में भेजा (आयत 14)। आयत 17 कहती है कि पतरस और यूहन्ना द्वारा नये बने मसीहियों पर हाथ रखने से उन्हें पवित्र आत्मा मिलने लगा: ''क्योंकि वह अब तक उन में किसी पर न उतरा था, उन्होंने तो केवल प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया था'' (आयत 16)।

आयत 16 में दो तथ्य मिलते हैं। हमने पहले ही देखा है कि जब पवित्र आत्मा किसी पर ''उतरता'' था तो उसे आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ मिलती थी। पश्चात्ताप करने वाले को दान के रूप में पवित्र आत्मा दिए जाने, अर्थात बपतिस्मा लेने वाले विश्वासी को दी गई प्रेरितों 2:38 की प्रतिज्ञा और आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ देने पर किसी पर पवित्र आत्मा उतरने में हम अन्तर देखते हैं। जब प्रेरित पहले-पहल सामरिया में आए, तो कुछ नये मसीहियों को केवल ''प्रभु यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा'' दिया गया था और उन्हें ''पवित्र आत्मा का दान'' मिला था (प्रेरितों 2:38)। परन्तु ''उन में से किसी पर'' पवित्र आत्मा ''नहीं उतरा'' था, जिस कारण अभी तक उन में से कोई भी आश्चर्यकर्म से चिह्न नहीं दिखा सकता था। आश्चर्यकर्म की ऐसी सामर्थ केवल प्रेरितों के द्वारा ही दी जा सकती थी।

सामरियों पर

प्रेरितों 8:17, 18 कहता है, ''तब उन्होंने उन पर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र आत्मा पाया। जब शमौन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र आत्मा दिया जाता है, तो वह उन के पास रुपए लाया।'' पवित्र आत्मा तो अदृश्य है, तो फिर शमौन ने कैसे ''देखा'' कि प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र आत्मा दिया जाता है ? बाइबल हमें स्पष्ट नहीं बताती, पर हम अनुमान लगा सकते हैं कि प्रेरितों के हाथ रखने के बाद, सामरी लोग चिह्न दिखाने लगे थे, जो देखे या सुने जा सकते थे। जब शमौन ने ये चिह्न देखे तो उसने प्रेरितों से आश्चर्यकर्म

करने की इस सामर्थ को खरीदना चाहा।

शमौन ने जो उस अवसर पर देखा था, वही आज यीशु के सब सच्चे चेलों को देखने की आवश्यकता है कि पवित्र आत्मा की ओर से आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ प्रेरितों के हाथ रखने के द्वारा दी जाती थी। प्रेरितों को अद्‌भुत चिह्न दिखाने की सामर्थ पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने से स्वयं यीशु की ओर से मिली। पवित्र आत्मा ने दूसरे मसीहियों को आश्चर्यकर्म करने के दान देना प्रेरितों के द्वारा चुना। क्योंकि आज प्रेरितों के रूप में सेवा करने के कोई योग्य नहीं है (प्रेरित होने की योग्यताओं के लिए तुलना प्रेरितों 1:21, 22), हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि आज कलीसिया में ''प्रेरित'' का पद नहीं है। क्योंकि साथी मसीहियों पर हाथ रखने के लिए कोई प्रेरित नहीं है, इसलिए पवित्र आत्मा आश्चर्यकर्म के वह दान आज नहीं देता, जो पहली शताब्दी में देता था। इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि यीशु आज विश्वासी चेलों के जीवन में कार्य नहीं करता! यीशु आज भी सामर्थ से कार्य करता है, पर वह विश्वास और प्रार्थना के द्वारा कार्य करता है, न कि प्रेरितों के द्वारा आश्चर्यकर्म करने के दान देने से।

प्रेरितों के काम पुस्तक उस माध्यम की रूपरेखा बताती है, जिसके द्वारा आरम्भिक कलीसिया में पवित्र आत्मा से आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ दी गई थी। पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के बपतिस्मे से प्रेरितों को ''स्वर्ग से सामर्थ'' (लूका 24:49) मिलने के कारण आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ दी गई थी। इस सामर्थ ने उन्हें परमेश्वर की प्रेरणा से बोलने, आश्चर्यकर्म करने, हाथ रखकर दूसरे मसीहियों को आश्चर्यकर्म करने के दान देने में सक्षम बनाया। प्रेरित का पद बहुत अधिकारात्मक था, जो स्वयं यीशु मसीह के बाद दूसरा पद था (तुलना इफिसियों 2:20)। प्रेरितों और उनके काम से कलीसिया (इफिसियों 2:20) और स्वर्ग की नींव बनी (प्रकाशितवाक्य 21:14)।

आत्मा का वास

आत्मा के आश्चर्यकर्म करने के दान तो पवित्र आत्मा के बपतिस्मे और प्रेरितों के हाथ रखने के द्वारा दिए जाते थे, परन्तु प्रेरितों 2:38 में पतरस ने प्रतिज्ञा की कि अपने पापों से मन फिराने और पानी में बपतिस्मा लेने वालों को ''पवित्र आत्मा का दान'' दिया जाएगा।

पवित्र आत्मा का दान जैसा कि प्रेरितों 2:38 में प्रतिज्ञा की गई है, पवित्र आत्मा की ओर से आश्चर्यकर्म करने का दान नहीं, बल्कि स्वयं पवित्र आत्मा का वास करना है। पतरस ने प्रचार किया, ''क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी संतानों, और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिए भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा'' (प्रेरितों 2:39)। इस प्रतिज्ञा में कई समूहों को शामिल किया गया था। पहले तो, ''तुम और तुम्हारी संतानों'' में यहूदी और उनकी संतान शामिल थे। ''उन सब दूर के लोगों के लिए'' में अन्य जातियों को शामिल किया गया। पतरस द्वारा पहली बार यह प्रतिज्ञा सुनाए जाने पर बेशक उसे इसकी पूरी समझ नहीं थी, परन्तु प्रेरितों 10 में कुरनेलियुस और उसके परिवार पर आत्मा के विशेष बहाए जाने के द्वारा पतरस और उसके यहूदी भाइयों को यह विश्वास हो

गया कि अन्यजातियों को भी प्रेरितों 2:39 वाली प्रतिज्ञा में मिला लिया गया है।

सारांश

हमारे प्रभु ने मनुष्य के लिए असम्भव सारे संसार में अपने गवाह होने के कार्य के लिए अपने प्रेरितों को आश्चर्यकर्म से तैयार किया। प्रेरितों 1:8 कहता है, ''परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा, तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।'' हमारा प्रभु पवित्र आत्मा के गैरचमत्कारी दान के वास से अपने सभी आज्ञा मानने वाले चेलों को भी तैयार करता है, ताकि हम मसीही जीवन जी सकें और अपने जीवनों में आत्मिक फल ला सकें।

असली प्रेरित के चिह्न

प्रेरितों और आश्चर्यकर्म करने की उन्हें मिलने वाली सामर्थ पर विचार करते हुए, आवश्यक है कि हम प्रेरित बनने की योग्यताओं को पौलुस के विलक्षण ढंग से मिलाएं। पौलुस मूल बारह प्रेरितों में से नहीं था, जिस कारण उसके प्रेरित होने पर उसके जीते जी बहुत से लोगों ने सवाल उठाए थे। उसने दृढ़ता से ईश्वरीय नियुक्ति से अपनी प्रेरिताई का यह दावा करते हुए बचाव किया था, ''कि जो सुसमाचार मैंने सुनाया है, वह मनुष्य का सा नहीं ... । पर यीशु मसीह के प्रकाश से मिला'' (गलातियों 1:11, 12)। पौलुस की प्रेरिताई में अन्य जातियों को दिया गया उसका एक विशेष मिशन है (रोमियों 11:13)। यद्यपि पौलुस ने यह माना कि वह ''अधूरे दिनों का जन्मा'' था (1 कुरिन्थियों 15:8), उसके काम (1 कुरिन्थियों 9:1, 2) और आश्चर्यकर्मों (2 कुरिन्थियों 12:12) से सिद्ध होता था कि उसकी नियुक्ति परमेश्वर की ओर से थी। कुरिन्थियों में वह ''सबसे अधिक अन्य-अन्य भाषाओं में बोलता'' था (1 कुरिन्थियों 14:18)। प्रेरितों में विशेष योग्यताएं थीं (तुलना प्रेरितों 1:21, 22), पौलुस में वे योग्यताएं इसलिए थीं, क्योंकि उसने प्रभु को देखा था (प्रेरितों 22:6, 10) और यीशु ने उसे स्वयं प्रेरित चुना था। प्रभु ने कहा था, ''यह तो अन्य जातियों और राजाओं और इस्राएलियों के सामने मेरा नाम प्रकट करने के लिए मेरा चुना हुआ पात्र है'' (प्रेरितों 9:15)। बिना किसी संदेह के, पौलुस का प्रेरित होना परमेश्वर की ओर से ही था। उसे आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ *कैसे* मिली, यह नहीं बताया गया है, पर यह ध्यान देना दिलचस्प है कि पौलुस को ''पानी में'' (तुलना प्रेरितों 22:16) बपतिस्मा दिया गया था, न कि ''पवित्र आत्मा में।''

भौतिक संसार में, परमेश्वर ने पहले पुरुष और स्त्री को आश्चर्यकर्म से बनाया था। दूसरे सभी मानवीय जीव स्वाभाविक जन्म की प्रक्रिया के द्वारा संसार में आए हैं। उसके पवित्र आत्मा में उन बारह को आश्चर्यकर्म से बपतिस्मा देने के बाद, तीन हज़ार लोगों को पानी में बपतिस्मा दिया गया और कलीसिया में मिलाया गया था (प्रेरितों 2:38, 41)। ये मसीही लोग कलीसिया में वैसे ही आए जैसे आज सभी मसीही मन फिराव और बपतिस्मे के द्वारा इसमें प्रवेश करते हैं।

पौलुस ने लिखा है, ''क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी, क्या यूनानी, क्या दास, क्या स्वतन्त्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक होने के लिए बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया'' (1 कुरिन्थियों 12:13)। इतना होने पर भी मसीही लोगों को आत्मा के आश्चर्यकर्म से बपतिस्मा देने की प्रतिज्ञा नहीं कर रहा था। वह तो केवल यह कह रहा था कि जिन्होंने आत्मा द्वारा दिए गए उद्धार की योजना को माना है, उन्होंने एक मसीह की देह में पानी से बपतिस्मा लिया है। मसीह की देह के रूप में संसार में कलीसिया का जन्म तब हुआ था जब मसीह ने पिन्तेकुस्त के दिन अपने पवित्र आत्मा में अपने प्रेरितों को बपतिस्मा दिया था। तभी से, परमेश्वर हर उस व्यक्ति को जो मन फिराकर बपतिस्मा लेने के द्वारा उसकी आज्ञा मानता है, अपना आत्मा देता है (प्रेरितों 2:38, 39)। परमेश्वर की आज्ञा मानने वालों को पवित्र आत्मा दिया जाता है (प्रेरितों 5:32) और उन्हें ''एक ही आत्मा पिलाया जाता'' है। प्रेरितों 2:38, 39 की प्रतिज्ञा *सभी* पश्चात्तापी, बपतिस्मा लेने वाले चेलों के लिए है, न कि कुछ विशेष लोगों के लिए जो आत्मा के आश्चर्यकर्म के द्वारा दान पाए होने का दावा करते हैं।

परमेश्वर के वचन के द्वारा आत्माओं को परखते हुए, हमें यह निष्कर्ष निकालना होगा कि आज प्रेरित होने का दावा करने वाले लोग ''झूठे प्रेरित, और छल से काम करने वाले, और मसीह के प्रेरितों का रूप धरने वाले हैं'' (2 कुरिन्थियों 11:13)। उनमें प्रेरितों 1:21, 22 में पवित्र आत्मा द्वारा ठहराई गई योग्यताओं में से *एक भी नहीं* है। उनमें ''प्रेरित के लक्षण'' (2 कुरिन्थियों 12:12) नहीं हैं और अपने हाथ रखकर दूसरों को आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ देने के अयोग्य हैं। *ऐसे किसी भी व्यक्ति से जो आज यीशु का प्रेरित होने का दावा करता है, सावधान रहें!*